अभीक्षा

अप्रैल-जून, 2003

अंक : 1 ● वर्ष : 36

सपादक

गोपाल राय : हरदयाल

❑ उपनिवेश में स्त्री ❑ लपटें ❑ गोस्वरू ❑ तलहटी ❑ मृगतृष्णा
❑ गिलिगड़ ❑ घर-परिवेश ❑ फाउस्ट ❑ ज्वाला और जल ❑ देहरी के पार
❑ चन्द्रकांता ❑ निर्भीक और निष्पक्ष जोगिन्दर सिंह ❑ प्रतिघात ❑ चर्या
❑ अक्षर-बीज की हरियाली ❑ खेल-खेल में ❑ इक्कीस कहानियां ❑ स्वयंभू
❑ फादर कामिल बुल्के ❑ कृष्णावेणी में संध्या ❑ दलित साहित्य 2002
❑ नक्सल ❑ कहां जा रहे हैं हम

समीक्षा

अप्रैल-जून, 2003
वर्ष 36 : अंक 1

प्रकाशन-तिथि :
20 जून, 2003

सपादक
गोपाल राय : हरदयाल
सह-संपादक : सत्यकाम
प्रस्तुति : श्रीकृष्ण

सम्पर्क :
संपादक, समीक्षा
एच-2, यमुना
इ.गा.रा.मु. विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नयी दिल्ली-110068
फोन : 26853534

वार्षिक सहयोग राशि : 80.00
प्रेषण तथा अन्य सेवा शुल्क : 20.00
व्यक्ति ग्राहकों के लिए रु. 10/- की छूट
आजीवन सहयोग राशि (संस्थाएं) : 1500.00
आजीवन सहयोग राशि (व्यक्ति) 1000.00

निवेदन

- कृपया चेक अथवा ड्राफ्ट 'समीक्षा' के नाम (देय दिल्ली-नयी दिल्ली) नये पते पर ही भेजें। दिल्ली के बाहर के चेक में शुल्क की राशि के साथ रु. 35/- बैंक कमीशन जोड़ दें।
- मनीआर्डर के कूपन पर प्रेषित धनराशि और प्रेषक का नाम-पता अवश्य लिखें।
- कोई अंक न मिलने पर उसकी सूचना शीघ्र दें।
- शुल्क के बिल का भुगतान यथाशीघ्र करें।

व्यक्ति ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपनी शुल्क-अवधि के समाप्त होते ही नये वर्ष का शुल्क भेज दें, ताकि हमें पत्र न लिखना पड़े और समीक्षा की आपूर्ति भी जारी रहे।

अनुक्रम

संपादकीय	गोपाल राय	2
पत्र-प्रतिक्रिया		6
तरल नारीवाद : उपनिवेश में स्त्री	हरदयाल	8
जिंदगी के बहुत करीब की कथा-संवेदना : लपटें, गोखरू, तलहटी	वेदप्रकाश अमिताभ	11
शेयर का सच : मृगतृष्णा	सत्यकाम	17
गिलिगडु : गदाधरबाबू का पुनराख्यान	रोहिणी अग्रवाल	21
घर-परिवेश की आत्मीयता	सुनीता	24
गोएथे का फाउस्ट	सिद्धनाथ कुमार	26
प्रेम की विजय : ज्वाला और जल	हरदयाल	27
जीवन की अर्थवत्ता : दर्शन, धर्म-अध्यात्म और संस्कृति	व्रजेश	28
रामायण महातीर्थम्	रामचंद्र तिवारी	30
जनजातीय भाषाएं और ईसाई मिशनरी	सत्यकेतु सांकृत	32
अक्षर बीज की हरियाली	रामप्यारे तिवारी	33
पुत्रशोक में विह्वल पिता की गाथा : देहरी के पार	विजय शिंदे	35
वर्तमान से साक्षात्कार : खेल-खेल में	चेतना राजपूत	38
राष्ट्रभाषा का प्रश्न और राहुलजी	सदानंदप्रसाद गुप्त	40
छत्रपति शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा	गिरीश काशिद	42
भगवती बाबू की संपूर्ण कहानियां	वीरेंद्र सक्सेना	43
अपने समय की कहानी कहती इक्कीस कहानियां	सुमित्रा अग्रवाल	45
विविधवर्णी निबंध : नैवेद्यम	रत्ना पांडे	46
भारतीय साहित्य के निर्माता : फादर कामिल बुल्के	राजकुमार सैनी	47
भारतीय इतिहास के संधिकाल में घिरती शाम : कृष्णवेणी में संध्या	आदर्श सक्सेना	48
चंद्रकांता	सिद्धनाथ कुमार	49
दलित साहित्य	रामप्यारे तिवारी	50
मकेल	साधना अग्रवाल	51
कहां जा रहे हैं हम	चेतना राजपूत	52
निर्भीक और निष्पक्ष जोगिंदर सिंह	रामचंद्र तिवारी	53
प्रतिघात	विपिनविहारी ठाकुर	54
त्रयी	अनंतकीर्ति तिवारी	55

गोपाल राय

संपादकीय

इस अंक के साथ **समीक्षा** की यात्रा के छत्तीसवें वर्ष का आरंभ हो रहा है। इस पड़ाव पर पहुंचकर जब इन पंक्तियों का लेखक इसके अतीत को निहारता है, तो उसे अपने 'विफल' होने का कोई कारण नजर नहीं आता। जहां तक 'दूसरों' की बात है, मुझे दो तरह के लोग मिले हैं। बड़ा वर्ग उन लोगों का है, जो **समीक्षा** को एक उपयोगी पत्रिका मानते हैं। इसकी तटस्थता, गुटबंदी से मुक्त रहने का संकल्प, प्रजातांत्रिक मानसिकता और संपादकीय साहस की प्रशंसा करनेवालों की तादाद काफी बड़ी है। ऐसे लोगों के बल पर **समीक्षा** निकल भी रही है, इसे स्वीकार करने में इन पंक्तियों के लेखक को कोई संकोच नहीं है। पत्रिका निकालने के लिए धन आवश्यक है, यह तो कहने की कोई बात नहीं। यदि कोई संपादक संपादन, मुद्रण, वितरण आदि की सारी व्यवस्था खुद भी कर ले, तो भी मुद्रण, वितरण और कार्यालय संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने के लिए कुछ धन तो चाहिए ही। सम्प्रति **समीक्षा** का व्यवस्था-व्यय लगभग शून्य है। संपादन अवैतनिक; समीक्षा-लेखन निःशुल्क, कार्यालय : संपादक का कमरा, इसलिए वह भी निःशुल्क; कार्यालय-सहायक का खर्च भी नगण्य। फिर भी प्रति अंक का खर्च लगभग दस हजार रुपये तो है ही; अर्थात् प्रति वर्ष चालीस हजार रुपये का बजट। यह राशि कहां से आती है? एक विश्वविद्यालय-सेवा से कृतकार्य अध्यापक से, जो अब अपने जीवन के आठवें दशक में प्रवेश कर चुका है, यह उम्मीद तो नहीं की जा सकती कि वह अपनी जमापूंजी से यह 'शौक' फरमाये! वह इस उम्र में भी 'पीर बवर्ची भिस्ती खर' वाली भूमिका निभाते हुए एक पत्रिका निकालता जाये, इसकी उम्मीद करना भी क्या उसके साथ ज्यादती नहीं है? क्या उसके सामने कोई और साहित्यिक लक्ष्य नहीं है? पर हम छोड़ें ये सब बातें। कोई कह सकता है कि किस डॉक्टर ने आपको यह सब करने की सलाह दी है? मैं जानता हूं, ऐसा कहनेवाले लोग भी हैं। पर ऐसे लोग बड़ी संख्या में हैं जो **समीक्षा** को अपना 'नैतिक' ही नहीं, 'आर्थिक' समर्थन भी देते हैं। ऐसे लोग अपना नाम प्रकट नहीं होने देना चाहते, इसलिए उनका नाम नहीं लूंगा। एक महिला हैं, जो 'समीक्षा' को प्रतिवर्ष दस हजार रुपये का अनुदान देती हैं। एक सज्जन हैं, जो बीस ग्राहकों का शुल्क अपनी तरफ से देते हैं। एक सरकारी विभाग है, जो डेढ़ सौ प्रतियां खरीदता है। (पहले दो सौ प्रतियां खरीदी जाती थीं; इस वर्ष पचास प्रतियों की कटौती कर दी गयी है!) एक दूसरा विभाग भी 35 प्रतियां खरीदता है। बहुत सारे 'आजीवन सदस्य' हैं, जो अनुरोध करने पर 'अतिरिक्त' राशि भेजने में संकोच नहीं करते हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो कभी-कभार कुछ सहायता-राशि भेजते रहते हैं। नियमित सदस्य संस्थाओं की संख्या लगभग 125 और व्यक्ति सदस्यों की संख्या लगभग तीस है।...तो ये हैं 'समीक्षा' की आय के स्रोत। पर इससे बड़ी बात है वह प्रोत्साहन जो हमें पाठकों और लेखकों से लिखित और मौखिक रूप में प्राप्त होते हैं।

पर एक वर्ग ऐसे लोगों का भी है, जिन्हें **समीक्षा** फूटी आंखों भी नहीं सुनाती। इनमें अधिकतर तथाकथित 'बड़े' साहित्यकार हैं, जो किसी प्रकार **समीक्षा** को बर्दाश्त कर रहे हैं। इनके लिए **समीक्षा** अछूत है। इन 'बड़े साहित्यकारों' के इशारे पर भौंकनेवाले कुछ दोयम दर्जे के भी लेखक हैं, जो इस कोशिश में लगे रहते हैं कि कहीं **समीक्षा** की चर्चा न हो जाये। एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, जो पत्रिकाओं की थोक रूप में खरीद करता है, पर **समीक्षा** उसके लिए उपयोगी पत्रिका नहीं है। इसके अपने कारण हैं, जिनका उल्लेख करना भी जरूरी नहीं है। साहित्य अकादमी अनेक पत्रिकाओं को विज्ञापन देती है, पर **समीक्षा** को नहीं देती। अन्य सरकारी संस्थाएं भी विज्ञापन देने में कोई उत्साह नहीं दिखातीं। दिल्ली के प्रकाशकों का भी यही हाल है। केवल दो-एक ही ऐसे प्रकाशक हैं, जो ससम्मान विज्ञापन देने की